# माता–पिता के शैक्षणिक स्तर का बाल विकास पर प्रभाव

**उपेन्द्र कुमार**
**शोधछात्र**
**शिक्षा–संकाय**
**बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय**
**मुजफ्फरपुर**

**सार**

बाल विकास का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस अत्याधुनिक युग में प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। विकास उन प्रगतिशील परिवर्तनों को कहते हैं जो नियमित एवं क्रमिक होता है। एक सार्वभौमिक संस्था है जिसमें माता-पिता अपनी सभी सेवाओं के द्वारा स्नेंह के साथ बच्चों का विकास कराने का प्रयास करते हैं। माता-पिता का प्रेम और वात्सल्य का विकास पर निश्चित निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। वे निःस्वार्थ भाव से बच्चें की हर समस्या के समाधान की दिशा में सोचते हैं। बाल मन मस्तिष्क गीली-मिट्टी की तरह होता है। उसे जैसा आकार दो वह वही आकार धारण कर लेगा। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत माता-पिता की शिक्षा का बच्चों के विकास पर प्रभाव पड़ता है या नहीं इसे देखने के लिए परीक्षण किया गया। इस अध्ययन के आधार पर बच्चों के सर्वांगीण विकास पर किस रूप में प्रभाव पड़ता है देखने का प्रयास किया गया। उपर्युक्त अध्ययनों से इस बात की पुष्टि होती है कि विकास पर बाल-विकास की मनोवृत्ति का प्रभाव पड़ता है।

**महत्त्वपूर्ण शब्दः बाल विकास, परिवर्तन, प्रेम, वात्सल्य, परीक्षण, सर्वांगीण विकास, मनोवृत्ति।**

बाल विकास का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक यह महत्व का विषय रहा है। प्राचीन काल में सर्वांगीण विकास हेतु शुरू में आश्रम का सहारा लिया जाता था। लेकिन इस अत्याधुनिक युग में प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। बच्चों में जन्म के साथ ही विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है जो सभी रूपों में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगती है। इस पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में माता-पिता की मनोवृत्ति एवं जीवन शैली का निश्चित रूप से प्रभाव पड़ा है।

विकास उन प्रगतिशील परिवर्तनों को कहते हैं जो नियमित एवं क्रमिक होता है। बाल्यावस्था जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती है। प्रारंभिक जीवन काल में बच्चों को किसी भी बात की जानकारी स्पष्ट रूप से नहीं होती है। वे माता-पिता पर अपनी हर आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्भर करते हैं। परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है जिसमें माता-पिता अपनी सभी सेवाओं के द्वारा स्नेंह के साथ बच्चों का विकास कराने का प्रयास करते हैं।

वे निःस्वार्थ भाव से बच्चें की हर समस्या के समाधान की दिशा में सोचते हैं। माता-पिता का प्रेम और वात्सल्य का विकास पर निश्चित निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। माता-पिता एक सुदृढ़ वृक्ष के समान और बच्चे उसमें फूल-फल माने जाते हैं। मैकाईवर और पेज ने लिखा है – "परिवार एक समूह है जो लिंग संबंधी आधार पर परिभाषित किया जाता है और काफी ठोस व स्थायी है कि बच्चों की उत्पत्ति और पालन-पोषण की व्यवस्था करने योग्य है।"

वाटसन 1919 ने कहा था कि बच्चा जब जन्म लेता है तो वह अपने माथे पर यह लिखकर नहीं आता है कि वह बेईमान है कि ईमानदार, धर्मात्मा है या पापी। वह सब कुछ इस दुनिया में कदम रखने के बाद अपने परिवार से अपने पड़ोस से अपने आसपास के पूरे माहौल से क्रमशः सीखता है और अपना विकास करता है। बाल मन मस्तिष्क गीली-मिट्टी की तरह होता है। उसे जैसा आकार दो वह वही आकार धारण कर लेगा। हम उसे अच्छा एवं आदर्श नागरिक भी बना सकते है और बुरा से बुरा कर्म करने वाला अपराधी। वाटसन के इस चिन्तन के बाद से मनोवैज्ञानिकों

समाजशास्त्रियों एवं जिज्ञासु माता-पिता का ध्यान बाल पोषण-प्रणाली की ओर अधिक आकर्षित हुआ और अधिक से अधिक नियंत्रित और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में प्रयास शुरू हो गया। अब सभी मानने लगे कि एक युवा अपनी शैशव स्मृतियों को कभी भूलता नहीं है, और ये स्मृतियॉ ही उसके भावी जीवन का पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाती हैं।

विलियम जेम्स, मैकमूलर, ड्रेयर, बर्ट आदि वैज्ञानिकों ने वंश-परंपरा के क्रम में उसमें पाये जाने वाले व्यवहार की व्याख्या की हैं। जो स्टेनले हॉल ने बाल-विकास-आंदोलन का प्रारंभ अमेरिका में किया। जिस आधार पर आज वे इस आंदोलन के पिता जनक के रूप में जाने जाते हैं। इस संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया अध्ययन महत्वपूर्ण हैं। पिया गैट वर्ट 1918, हेगली 1930, मैकार्थी हॉल ने बच्चों के विकास पर पड़ने वाले विभिन्न कारकों के प्रभावों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत माता-पिता की शिक्षा का बच्चों के विकास पर प्रभाव पड़ता है या नहीं इसे देखने के लिए परीक्षण किया गया। इस अध्ययन के आधार पर बच्चों के सर्वांगीण विकास पर किस रूप में प्रभाव पड़ता है देखने का प्रयास किया गया। उपर्युक्त अध्ययनों से इस बात की पुष्टि होती है कि विकास पर बाल-विकास की मनोवृत्ति का प्रभाव पड़ता है।

माता-पिता के शैक्षणिक स्तर के प्रभाव को बाल विकास के निर्धारक तत्व के रूप में समाहित करने के पीछे सैद्धांतिक पृष्ठभूमि यह रही है कि शिक्षित तथा प्रबुद्ध माता-पिता अपने बच्चों को भी अद्यतन शैक्षणिक उपलब्धियों से पूर्ण करना चाहते हैं।

इस उद्देश्य से अपने बच्चों के विकास पर पूरा ध्यान देते हैं। वस्तुतः यह प्रकिया प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही प्रारंभ हो जाती है। लेकिन वर्तमान सामाजिक परिवेश में कभी-कभी इसका परिणाम आश्चर्यजनक आता है। माता-पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनसे प्राप्त सूचना के संदर्भ में यह प्राक् कल्पना की जाती है, कि उच्च शैक्षणिक स्तर के माता-पिता के बच्चों का विकास निम्न शैक्षणिक स्तर के माता-पिता के बच्चों की अपेक्षा अधिक अनुकूल पाया जायेगा।"

मुजफ्फरपुर जिला अंर्तगत कटरा प्रखण्ड के समीप के गॉवों से तीन सौ माता-पिता को सम्मिलित किया गया।

**मापनी :**

मापनी के अर्तंगत व्यक्तिगत सूचना के आधार पर उनके शैक्षणिक स्तर को आधार बनाया गया। जिसमें उसे तीन वर्गों में विभक्त कर देखा गया।

**क.** मैट्रिक

**ख.** इण्टमीडिएट

**ग.** स्नातक एवं उससे ऊपर।

**प्रतिदर्ष :**

सम्मिलित तीन सौ माता-पिता जो सभी वर्गों के थे।

**परिणाम :**

माता-पिता का शैक्षणिक स्तर एवं बाल-विकास को निर्धारित करने के लिए प्रतिदर्श से प्राप्त सूचना के आधार पर उनके शैक्षणिक स्तर के संबंध में प्रश्न पूछा गया। प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर माता-पिता के शैक्षणिक स्तर को आधार मानकर प्रयोगों की तीन श्रेणियॉ निर्धारित की गई। उच्च शिक्षा, मध्यम शिक्षा एवं निम्न शिक्षा। स्नातक एवं उपर की शिक्षा प्राप्त उच्च श्रेणी, इण्टर की शिक्षा प्राप्त मध्यम श्रेणी, एवं मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त को निम्न श्रेणी में रखा गया।

माता–पिता के शैक्षणिक स्तर पर आधारित इन तीनों ही समूहों में प्रति समूह प्रतिदर्श की संख्या एक सौ निर्धारित की गयी। इन तीनों ही समूहों में माता-पिता की भूमिका पर बाल-विकास के संबंध में उपर वर्णित प्राक् कल्पना में उच्च शिक्षित माता-पिता के बच्चों में निम्न शिक्षित माता-पिता के बच्चों की अपेक्षा अधिक अनुकूल विकास पाया जायेगा। उच्च

मध्यम एवं निम्न इन तीनों ही समूहों के पृथक-पृथक प्राप्तांकों पर आधारित सांख्यिकीय विश्लेषणों की प्रमाणिकता तथा उनके बीच अन्तर्क्रिया को देखने के लिए टी. अनुपात तथा प्रसरण विश्लेषण-विधि का प्रयोग किया जो सारिणी संख्या एक व दो में क्रमशः उल्लिखित किया गया है।

**सारिणी संख्या - 1**

**तीनों समूहों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता**

**माता-पिता एवं बाल विकास प्राप्तांक**

| समूह | संख्या | मध्यमान | प्रामाणिक विचन | टी. अनुपात क–ख | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| उ.शै.स. | 100 | 34.75 | 8.55 | 4.10 | 0.1 |
| म..शै.स. | 100 | 30.70 | 7.77 | 1.01 | असार्थक |
| नि..शै.स. | 100 | 31.97 | 6.80 | 3.70 | .01 |

ऊपर वर्णित तीनों ही समूहों की सांख्यिकीय परिणामों के तुलनात्मक विवेचन से यह स्पष्ट हो रहा है कि उच्च समूह के बाल.विकास प्राप्तांकों का मध्यमान 34.75, मध्यम समूह के 30.75, तथा निम्न समूह का मध्यमान 31.97 पाया गया है। उक्त समूहों की पृथक.पृथक तुलना करने से यह स्पष्ट होता है कि उच्च एवं मध्यम समूहों क मध्यमानों का अन्तर मात्र 4.05 पाया गया है और इसका अन्तर विश्वसनीयता के .01 पर सार्थक प्रमाणित होता है। टी. अनुपात 4.10 पाया गया है। इस परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षित माता पिता के बच्चों का मध्यम शिक्षित माता.पिता के बच्चों की अपेक्षा अधिक अनुकूल विकास पाया गया है।

उच्च समूह तथा निम्न समूह का विकास प्राप्तांक मध्यमान क्रमशः 34.75 तथा निम्न समूह का मध्यमान 31.97 पाया गया है। इन दोनों ही मध्यमानों का अन्तर 2.78 पाया गया है। दोनों ही समूहों के बीच प्राप्त टी. अनुपात 3.70 जो विश्वसनीयता के 0.01 स्तर पर प्रमाणित हो रहा है। अतः इन दोनों ही समूहों के विषय में यह निष्कर्ष प्राप्त करना समीचीन है कि उच्च शिक्षित माता.पिता एवं निम्न शिक्षित माता.पिता के आधार पर प्राप्त परिणाम परिकल्पना को सत्यार्पित नहीं करता है बल्कि वर्तमान संदर्भ में निम्न शिक्षित माता.पिता भी अपने बच्चों के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते है। प्राप्त परिणाम यह दर्शाता है कि मध्यम एवं निम्न श्रेणियों के बीच प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान 30. 70 एवं 31.97 पाया गया है। इन दोनों ही समूहों के बीच अन्तर नगण्य प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार है – (1.27) इन दोनों ही मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता विश्वसनीयता के किसी भी सीमा पर सत्यापित नहीं हो रही है। परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि इन दोनों ही श्रेणियों के माता.पिता बच्चों के विकास पर समान रूप से ध्यान केन्द्रित करते हैं।

सारिणी संख्या . 2

तीनों ही समूहों के माता–पिता एवं विकास प्राप्तांको का प्रसरण विश्लेषण

| प्रसरण के स्रोत | डी. एफ. | वर्गों का योग | प्रसरण | एफ. अनुपात | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| ल.समू.प्रस. | 2 | 3038040.10 | 191902.05 | 33.40 | 0.1 |
| वृ.समू.प्रस. | 297 | 1706119.70 | 5744.51 | 33.40 | 0.1 |

प्रसरण विश्लेषण के परिणाम से यह सत्यापित होता है कि तीनों ही समूहों के प्रदत्तों पर आधारित सांख्यिकीय विश्लेषण का अन्तर सार्थक है अर्थात उच्च शिक्षित एवं निम्न शिक्षित माता पिता का बच्चों के विकास पर प्रभाव पड़ता है। एफ. अनुपात 33.40 विश्वसनीयता के 0.1 स्तर पर सार्थक प्रमाणित होता है। अतः यह परिणाम परिकल्पना को सत्यापित करता है।

परिकल्पना से तुलनात्मक निष्कर्ष निम्नलिखित हैः–

1. उच्च शैक्षणिक समूह की अपेक्षा बाल विकास अनूकुल प्रमाणित होता है।
2. उच्च शैक्षणिक समूह एवं निम्न शैक्षणिक समूह के बीच बाल विकास के संदर्भ में प्राप्त परिणाम में कोई खास अन्तर नहीं पाया गया है। जो दोनों ही समूह के माता.पिता के विकास को लेकर अधिक जागरूकता को प्रदर्शित करता है।
3. मध्यम शैक्षणिक समूह एवं निम्न शैक्षणिक समूह के बीच अन्तरों को सार्थकता इतनी कम पाई गयी है कि वह किसी भी स्तर पर अन्तर को सत्यापित नहीं कर पा रहा है।

## Reference:


1. Watson J. B. (1999): Psychology from the standpoint of a Behaviourist Philadelphia Lippin cott Co., 1919 (third ed.1929)
2. Copper J. B. (1966): Two Scale for Parent Evaluation Journal of Genetic Psychology,108, pp. 49-53
3. Garretee H. E. (1955): Satisfaction in Psychology and Education (Fourth Edition), Longman Green & Co, New York.
4. Goodes, S. & Hatt P. K. (1952): Methods in Social Research, New York, Mc. Grow Hill.
5. Guilford J. P. (1956): Fundamental Statistics in Psychology and Education, Third edition Mc. Grow Hill book Company, INC New York.
6. Brown F. J. (1954): Educational Psychology, 2nd Ed., New York Prentice Hall.
7. Kohel Berg (1961): The Development of Children's Orientation Forwards a Moral Order, 1961.
8. Miller Scoh A. (1986): Parents Beliefs About Their Children: Cognitive Abilities & Developmental Psychology, (Mar.) Vol. 22, pp. 276-84.
9. Jersild (1957): Child Psychology, Stamples Press Ltd. London, 1957.